कीटनाशक दवाओं का भण्डारण करते समय सावधानियाँ

कृषि कुंभ (मई 2023),
खण्ड 02 भाग 12, पृष्ठ संख्या 11–12

रवि कुमार रजक[1], डॉ. पंकज कुमार[2] एवं ओम नारायण[3]
[1]शोध छात्र, कृषि कीट विज्ञान विभाग, [2]सहा. प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, [3]शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय, कुमारगंज, अयोध्या उत्तर प्रदेश–224229, भारत।
Email: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

कृषि क्रांति के साथ नई–नई किस्मो का विकास हुआ और साथ ही साथ नयी उत्पादन तकनीकियो का प्रयोग भी बढ़ा, जिससे फसलों में कीटो की विकट समस्या सामने आयी है। और ऐसे समय में किसानो तथा कीट वैज्ञानिको ने विभिन्न नई संश्लेषित कीटनाशियो का प्रयोग कर नियंत्रण में से बहुत अच्छी क्रांति लायी, इस कीट नियंत्रण से मिली सफलता के कारण कीटनाशियों पर निर्भरता बढ़ी है। और कहीं–कहीं पर कीट नाशियों का प्रयोग बहुत ज्यादा मात्रा में हुआ और कहीं निर्धारित योजना के बिना इनका उपयोग किया गया है। कीटनाशियो के बहुत अधिक एवं अंधाधुंध उपयोग के भयंकर खतरनाक परिणाम सामने आये जैसे लाभदायक कीटो का विनाश, उपचारित कीटो का पुनरुत्थान खाद्यान्नों में विष के अवशेष, पौधों एवं पर्यावरण में शेष रह जाना आदि। किन्तु अधिक खाघन्न उत्पादन प्राप्त करने में सामयिक कीट प्रबंधन को अनदेखा किया जाना और तर्क संगत प्रतीत नही होता है। और भरपूर उत्पादन की प्राप्ति कीट प्रबंधन कार्यक्रम के योजनाबध्द ढंग से अपनाने पर ही संभव हो सकती है। और मानव शरीर में इनका प्रवेश कई प्रकार से होता है।

कीटनाशक त्वचा द्वारा शरीर में जाना –

कीटनाशी त्वचा से सीधे शरीर में प्रवेश कर जाते है। और घोल बनाते समय, एवं डिब्बो को खोलते समय, तथा एकस्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय या फिर छिड़काव के समय शरीर पर पड़ जाते है।

कीटनाशक मुंह द्वारा शरीर के अंदर जाना –

कीटनाशी द्वारा दूषित भोजन ग्रहण करने से और हरे फल एवं सब्जियॉ खाते समय भी यह कीटनाशी रसायन मुंह द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाता है।

कीटनाशक श्वसन द्वारा शरीर के अंदर जाना–

बाहर खुले दूषित वातावरण में सांस लेने से कीटनाशक नाक द्वारा शरीर में अंदर प्रवेश कर जाते है। और इस प्रकार दवा को सीधे सूंघने या बिना गैस मास्क के छिड़काव करने से भी कीटनाशी का घाटक घुम्र शरीर में प्रवेश कर विकार पैदा कर सकता है। कीटनाशक कृषि फसलो के लिए नितांत आवश्यक है। लेकिन असावधानी पूर्वक उपयोग करने पर प्राणघातक भी सिध्द हो सकते है। अतः इनको खरीदते समय, भंडारण में, और घोल बनाने तथा छिड़काव या फिर खेत में भुरकाव करते समय कुछ सावधानियां अपनाना बहुत जरूरी है। और दुकानों में कई प्रकार के कीटनाशक उपलब्ध है। जिनका विषैलापन अलग–अलग प्रकार का होता है। इस विषैलेपन को आसानी से समझने के लिए बोतल या पैकेट में चिपके हुए लेबल को देख सकते है। यह लेबल चौकोर आकृति का होता है जो दो तिकोने भागो में बंटा होता है। इन तिकोने आक्रतियो को देखकर कीटनाशी के विषैलेपन का पता लगाया जा सकता है।

कीटनाशक भंडारण के समय यह सावधानियां जरूर ध्यान रखें –

- ❖ कीटनाशक रसायनों को जहां तक हो आवश्यकतानुसार ही खरीदना चाहिए।
- ❖ कीटनाशक रसायनों को मुॅह को पास करके नही सूंघना चाहिए।
- ❖ रसायनों को उनके ही डिब्बो में रखना चाहिए कभी भी दूसरे डिब्बो में नही रखना चाहिए इसे अलग डिब्बे में रखने से भूलवश कोई भी पी सकता है।

- ❖ कीटनाशकों को बच्चों की पहुंच से दूर ताले में बन्द कर या फिर ऊँचे स्थान पर रखना चाहिए।
- ❖ कीटनाशको को भंडारगृह में रखना चाहिए अन्यथा इनसे निकलने वाली हानिकारक गंध स्वास्थ्य को हानि पहुंच सकती है।

कीटनाशक का घोल तैयार करते समय यह सावधानियॉ जरूर ध्यान रखें –

- ❖ किसान भाइयों को कीटनाशक का घोल हमेशा खुली हवा में बनाना चाहिए।
- ❖ किसान भाई घोल बनाते समय यह ध्यान रखें कि जितने रसायन का छिड़काव करना हो उतने रसायन में ही पानी की मात्रा मिलानी चाहिए।
- ❖ किसान भाई कीटनाशक का घोल बनाने में जो बर्तन प्रयोग करे, उन बर्तनों का उपयोग घर में दुबारा न करें।
- ❖ घोल को मिलाने के लिए कभी भी हाथ का प्रयोग न करे हमेशा लकड़ी आदि की सहायता से उसे मिलाए।
- ❖ घोल बनाते समय अगर कीटनाशक शरीर पर पड़ जाए तो तुरन्त साबुन से साफ कर लेना चाहिए।

कीटनाशक का छिड़काव करते समय यह सावधानियॉ जरूर ध्यान रखें –

- ❖ छिड़काव के समय पूरे शरीर पर कपड़े एवं हाथों में रबर के दस्ताने और मुँह पर मास्क जरूर लगाना चाहिए।
- ❖ छिड़काव शाम के समय और बुरकाव सुबह के समय करना चाहिए। और यह ध्यान जरूर रखें कि छिडकाव करते समय पत्तियों पर पानी की बूंदे नही रहनी चाहिए।
- ❖ तालाब एवं चारागाह के पास छिडकाव करते समय विशेष सावधानियो का ध्यान रखना चाहिए।
- ❖ हवा की विपरीत दिशा में छिड़काव और भुरकाव बिलकुल भी न करें।
- ❖ किसान भाई दो कीटनाशको को अपनी समझ से मिलाकर बिलकुल भी न डालें।
- ❖ किसान भाई रसायन को छिड़कते समय बीड़ी आदि बिल्कुल भी न पियें।
- ❖ किसी भी फसल के साथ परजीवी एवं परभक्षी मित्रजीव भी रहते है उनकी संख्या अधिक होने पर रसायनों का उपयोग उचित सलाह से ही करे।

कीटनाशक छिड़काव के बाद यह बात जरूर ध्यान रखें –

- ❖ कीटनाशक छिडकाव के बाद जो डिब्बे खाली हो गये हो उन्हें जमीन में गाड़ देना चाहिए। उनको अन्य उपयोग में नही लाना चाहिए।
- ❖ छिड़काव के बाद जिस खेत में छिड़काव किया गया है उसमे पहचान का कोई चिन्ह बना देना चाहिए।
- ❖ छिड़काव के बाद साबुन से स्नान करना चाहिए और कपड़ो को धोकर सुखाकर ही पहनना चाहिए।

कीटनाशी रसायनों से प्रभावित

व्यक्ति की प्राथमिक चिकित्सा–

कीटनाशी रसायनों से प्रभावित किसान व्यक्तियों में हृदय रोग, दमा, सनलीपन, पागलपन, बांझपन के लक्षण पाए गए है। या फिर कीटनाशी के अधिक मात्रा में एक साथ शरीर में प्रवेश होने से जी मिचलाना, उल्टी, सिरदर्द, घबराहट, लडखडाना, उत्तेजित होना, बेहोशी आना आदि लक्षण प्रकट हो सकते है। कीटनाशी रसायनों के प्रयोग में पूरी सावधानी रखने के बावजूद रसायनों का कुप्रभाव दिखे तो ऐसी हालत में लक्षण दिखते ही डॉक्टर को उपचार के लिए बुलाना चाहिए डॉक्टर के आने तक निम्नलिखित प्राथमिक उपचार करना चाहिए।

- ❖ जिस भी व्यक्ति में कीटनाशक के लक्षण दिखें तो उसे तुरन्त वहां से हटाकर, खुली हवा में ले जाकर लेटाना चाहिए।
- ❖ अगर कीटनाशक की वजह से सांस चलना बन्द हो तो उसे कृतिम सांस देना चाहिए।
- ❖ जिस भी व्यक्ति में कीटनाशक के लक्षण दिखें तों उस व्यक्ति के सारे कपड़े ढीले कर देना चाहिए।
- ❖ अगर हाथ पैर ठंडे हो रहे हो तो उनको रगड़कर गरम रखना चाहिए।
- ❖ अगर शरीर पर अधिक रसायन पड़ गया हो तो उसे गरम पानी से साबुन लगाकर नहला देना चाहिए और उसके बाद पोछकर कंबल से ढक देना चाहिए।